सत्य

सत्य को
ईश्वर समझकर
सत्य को कुंठित करना
एक भ्रम के अतिरिक्त कुछ नहीं।

सत्य
ईश्वर हो ही नहीं सकता।

जलती झोपड़ियां कटी लाशें
झुलसी हुई लाशें
बहता खून
रोते बिलखते बच्चे
चूड़ियाँ तोड़ती हुई माँ
गुम सुम बदन
अर्थी से सजा आंगन
लाचारी और गरीबी का नंगानाच
यही सत्य की विस्तृत परिभाषा है
गरीबों के लिए।

संकलनकर्ता: दिगम्बर सिंह, "वरिष्ठ शोध सहायक"